मिशन शिफा-ए-रहमानी

REGISTRATION NO.: 1250/16 / PAN NO.: AABT13134N
EMAIL : SHIFA.A.REHMANI@GMAIL.COM / WEB : WWW.SHIFAAREHMANI.COM
MOB. : 97550-47070, 97536-39961

डॉ. सफदर सैफी क्लीनिक, जवाहर मार्ग, पेट्रोल पंप के पीछे,
साउथ तोड़ा, इन्दौर (म.प्र.) 452001

जिसने एक जान को नाहक मरने से बचा लिया गौया उसने पूरी इन्सानियत को बचा लिया।

"अल कुरान सुरह अल माईदा 5, आयत नं.32"

IUIIRT TRUST
HDFC Bank
211, Jawahar Marg, Indore (M.P.) 452002
A/C No. 50200031343720
IFSC Code : HDFC0000281

BHIM UPI
8305134034

विजन

"एक सेहमतंद इन्सान कौम व समाज की तामीर करता है", हर अज़ीम तब्दीली मे एक अजीम इंकलाबकी ज़रुरत होती है, और यह तब्दीली सेहतमंद और तालीमयाफ्ता समाज से ही आती है । मिशन शिफा-ए-रहमानी एक वसीय नज़रिया के साथ समाज को सेहत और सेहतमंदी की तालीम के लिए बेदार करता है।

اليد العليا خير من اليد السفلى واليد العليا المنفقة والسفلى السائلة

"उपर वाला हाथ हमेशा नीचे वाले हाथ से अफ़ज़ल होता है"... और उपर वाला हाथ वह है जो अल्लाह की राह में खर्च करता है और नीचे वाला हाथ हाजतमन्द (ज़रुरतमन्द) का होता है
(सही हदीस अल बुखारी 1429)

मिशन

मिशन शिफा-ए-रहमानी सिर्फ एक ज़रिया ही नही है मदद करने वाले और मदद चाहने वालों का, बल्कि एक मुकम्मल इंकलाब है, समाज को सेहतमंद बनाने और बैदार करने का... बीमारी मे ऑपरेशन के खोफ और रुपये न होने पर बेहतर इलाज न मिलने पर मायुसी से बाहर निकालने का... इलाज के बाद और पहले मरीज़ और उसके रिश्तेदारों को छोटेपन के जज़्बात से उबार कर खुद एतमादी के ज़ज्बे से भरने का

"मिशन शिफा-ए-रहमानी" का मकसद

- मरीज़ो को बेहतर सेहत के लिए कम खर्च मे सुपर स्पेशलिटी चेरिटेबल क्लिनिक फराहम करना।
- बीमारियों से सम्बंधित जाँचो (सी.टी. स्केन), एम.आर.आई. अल्ट्रा-सोनोग्राफी, खुन व दीगर सभी जाँचो के लिए विशेषज्ञ सेन्टर्स से विशेष अनुबन्ध जिसके ज़रिये सरकारी दरों में जाँचे करवाना।
- समाज को सेहत के लिए नुक्कड़, सेमिनार, मेडिकल केम्प के ज़रिऐ बेदार करना।
- विशेषज्ञ डॉक्टर्स, सर्जन व सुपर स्पेशालिटी हॉस्पिटल के साथ अनुबन्ध के तहत रियायती दरों पर बिना मैयार (क्वालिटी) से समझौता किऐ ऑपरेशन करवाना।
- ज़रुरतमंद मरीज़ और उसके रिश्तेदारों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर उनकी सेहत के मुतआल्लिक ज़रुरत को पुरा करना ताकि मरीज़ और उसके रिश्तेदार अकेला महसुस ना करें।
- ज़रुरतमंद मरीज़ो की हौसला अफज़ाई कर हिम्मत देना और उनकी जाईज़ ज़रूरतों को "हर पुर वकार" तरीके से पुरा करना जिससे उनके ज़मीर मे छोटे पन एहसास ना आऐ।
- मरीज़ो की बीमारी के हिसाब से सेहत के लिऐ सभी असबाब मुहैय्या करवाना।
- गरीब ज़रूरतमंद माज़ुर मरीज़ो के ऑपरेशन व इलाज करवाना और उनके बच्चों को सेहत, तालीम व उनके माआश के लिए साहिबे खैर लोगो के सदकात, ज़कात, इमदाद, अतियात के ज़रिऐ मदद फराहम करना।

मेनेजिंग ट्रस्टी साहब का पैगाम

हम (मुस्लिम) लोग अपने देश भारत मे अपने सदकात (दान) से मस्जिदो को बनाने मे सर्फ करते हैं... ज़कात व अतियात मदरसो मे... यह बहुत ही खुबसुरत बात हैं। यह होना भी चाहिए... लेकिन यह भी खास ध्यान रखने वाली बात हैं कि आज हमारे देश मे मुस्लिम समाज के बनाए हुए कितने हॉस्पिटल हैं ? उम्मत इलाज के लिए दर दर भटक रही हैं... सिर्फ इलाज और ऑपरेशन करवाने के लिए। बेहतर इलाज की बात मे बिल्कुल नही कर रहा हुँ... जब एक रिश्तेदार गलती से... जी हाँ गलती से... किसी हॉस्पिटल मे भर्ती हो जाता हैं... तो बाहर रहने वाले रिश्तेदार इस फिराक मे रहते हैं... कि किस तरह हॉस्पिटल बिल्डिंग के चंगुल से निकल कर मरीज़ बाहर आए... कैंसे सुरसा के मुँह जैंसे बढ़ते हुए हॉस्पिटल बिल्स को कम किया जा सके। कैंसे सस्ती से सस्ती दवाईया मुहैंया हो जाए... कैंसे हॉस्पिटल का टोटल बिल कम हो जाए... यह जाँचे क्यो करवा रहे हैं बार बार ? जब सब ठीक हैं तो यह हॉस्पिटल वाले हमारे मरीज़ को डिस्चार्ज क्यो नहीं कर रहे हैं ?

क्या आपको नहीं लगता हैं कि अब आपको अपने अपने शहरो मे सिर्फ और सिर्फ हॉस्पिटल बनाने पर ही अपना माल खर्च करना चाहिए... जिससे कि जो मुस्ताहिक मरीज़ इलाज के अभाव मे बे-मौत मर रहे हैं... उनके बारे मे क्या कुछ किया जा सके... कभी आपने सोचा हैं कि जब आपके लोगो को गाय व लव जिहाद के नाम पर सड़क पर लिंचिंग कर मारा जा रहा हैं। आपको बेहद गुस्सा आता हैं ना... सुन कर... देख कर... ??? पिछले महिने मे आपके मोहल्ले मे... शहर मे... कितने लोग इलाज के अभाव मे मर गए... इस बारे मे क्या आपने पता करने की कोशिश की ??? नही ना...

आपको पता ही न लगा हैं ना... वजह मे बताता हुँ... उनमे से कई लोग तो जब आधी रात को सीने मे दर्द हुआ तो अपनी मुफलिसी को छुपाने के बायस घर मे ही पढ़े रहे... उनके पास रुपए ही नही थे... कि वह हिम्मत कर लेता कि रात भर का हॉस्पिटल का खर्चा उठा लेंगे... सुबह उठे पानी की बाल्टी उठाई और बस रात भर से हार्ट अटैंक से घायल दिल का पम्प थक कर फेल हो गया... करने को सिर्फ बाते रह गई... अरे मौत भी कैंसी आई अभी तो अच्छे भले थे... पानी भर कर लाए थे ? यह सबसे बड़ी दुर्भाग्यपुर्ण विडम्बना हैं कि जिस शख्श को ICU मे कम्पलिट आराम की ज़रुररत थी वह उठकर पानी की बाल्टी उठा रहा था...

अभी पिछले दिनों एक मौलाना का विडियो वायरल हुआ था, जिसमे वह मुसलमानो को समझा रहे थे कि आप सरकारी हॉस्पिटल के गेट पर जाकर खड़े हो जाए 1000 रुपए लेकर और उसे ज़रुरतमन्दो को बाँट दे।

मौलाना साहब उम्मीद हैं कि जब आप बीमार होंगे तो किसी सरकारी हॉस्पिटल मे आपका भी इलाज होगा तब आपको पता लगेगा कि सरकारी हॉस्पिटल मे इलाज क्या हो रहा हैं ??? और कैसे हो रहा हैं।

आज उम्मत के रहनुमा सेहत के बारे में कुछ बोलने को ही तैंयार नहीं हैं... जबकि आज के दौर मे हमारे देखते ही देखते लोग जिस तरह के इलाज के अभाव मे असमय मर रहे हैं... वह एक आलमिया से कम नहीं हैं... जिस उम्मत को खैंर के काम करने की सबसे ज्यादा तरजीह दी गई हैं... फिज़ुल खर्ची से रोका गया हैं... वह उम्मत बे-परवाह हैं... मस्त हैं... कव्वालियो व शादियो मे रुपए उड़ा रही हैं... साल गिराहो मे केक मुँहो पर रगड़कर रिज्क की बेहुरमती कर रही हैं... बिना "पगड़ी" बांधने का मतलब समझे एक दुसरे को साफे बाँध रही हैं। पता नही एसा क्या काम कर दिया हैं उम्मत की फलाह का। तरक्की का। उम्मत को उरुज़ पर पहुँचाने का कि अपने आप को इस अहल (योग्य) पा रहे हैं कि "पगड़ी" बाँधवा ली जाए ? किस ख्यालो गुमान मे हैं...

लोगो वह काम करिए जिससे उम्मत के दुसरे भाईयों का भला हो...

एक हदीस ए कुदसी हैं हुज़ुरे पुर नुर सलल्ललाहो अलैंही व सल्लम ने फरमाया हैं कि "अल्लाह उस शख्श को बेहद पसन्द करता हैं" जो लोगों को नफा पहुँचाने का काम करता हैं"

((أحب الناس إلى الله أنفعهم للناس...)

लोगो अल्लाह को राज़ी करने के काम मे लग जाओ... इससे पहले कि कुछ एसा हो जाए कि बाद मे तुम अफसोस करो...

आज के दौर मे "सेहत" के लिए हमारी उम्मते मुस्लिमा के पास कोई मुनज्जम इन्तेज़ाम नही हैं... उलेमा हज़रात मेडिक्लेम को गैर शरइ करार देने से हालात और बद से बदतर हैं... सरकारी हॉस्पिटल से पर्याप्त बजट ना होने से मरीज़ो के लिऐ बिस्तरो, अत्याधुनिक जाँचो, विशेषज्ञ डॉक्टर्स, सर्जनस की अत्याधिक कमी हैं... उम्मत के पास हॉस्पिटल से अलग हटकर दुसरे ही व्यापार हो रहे हैं... उम्मत के एक बड़े तबके को हमारे देश मे आज भी इलाज उपलब्ध नही हो पा रहा हैं... हमारे मुल्क मे 40% लोग बीमार होने पर कर्जा लेते हैं... बचे हुऐ अपनी पेतृक ज़मीन बेचते हैं... दवाइयों के बदले अपने गहने गिरवी रखते हैं.... और हर साल अपने किसी अज़ीज़ो अकारीब की गम्भीर बीमारी का इलाज कराने के नजीजे मे 8% से 10% गरीबी की रेखा के नीचे चले जाते हैं।

हमारे मुल्क हर साल पुरी दुनिया के मुकाबले सबसे ज्यादा डॉक्टर्स तैंय्यार करता हैं परन्तु फिर भी हमारे पास बनियादी सुविधाओं वाले हॉस्पिटल जहाँ गरीब ज़रुरतमन्द व मध्यवर्गीय परिवार का इलाज आसानी से किया जा सके इसकी बेहद कमी हैं और निजि हॉस्पिटल्स मे इलाज कराना मजबुरी हैं जिसके लिऐ ज़रुरी रुपये मुहैय्या कराना बेहद मुश्किल भरा काम हैं।

मिशन शिफा-ए-रहमानी से हम "सेहतमाल" के ज़रिऐ इसी मुश्किल भरे काम को आसान करने की जद्दोजहद करते हैं और गरीब ज़रुरतमन्द मरीज़ो का इलाज व ऑपरेशन करमफर्मा डॉक्टर्स व सर्जनस की टीम के साथ नेक ख्यालात से भरे हॉस्पिटल मे मेडिकल उसुलो के अनुसार खुद्दारी के साथ इस तरह कराते हैं कि उनके दिल को किसी तरह की चोट न लगे। सेहतमाल से जुड़े और हर तरह से जानी माली इमदाद करे जिससे ज्यादा से ज्यादा मुस्तहिक लोगो को इलाज मुहैय्या कराया जाकर उनको और गरीब होने से बचाया जा सके।

मिशन शिफा-ए-रहमानी सिर्फ एक मिशन मात्र नहीं हैं बल्कि हर उस इंसान के लिए एक उम्मीद की किरण हैं जो पैंसो के अभाव में अपना ऑपरेशन नहीं करवा पा रहे हैं। मिशन शिफा-ए-रहमानी के ज़रिये हज़ारों लोग फैंज़ायाब हो चुके हैं और एक कामयाब सर्जरी के बाद अपनी ज़िंदगी हँसी खुशी आम लोगों की तरह जी रहे हैं और आपके लिए दुआओं मे हाथ भी उठा रहे हैं। ये मुमकिन हो पाया हैं आपकी अपनी कोशिशों से, मेरी नज़र मे हर वो इंसान मुबारकबाद का हकदार हैं जो इस तरह के मरीज़ो के लिए हर मुमकिन ताउन कर रहे हैं। मिशन शिफा-ए-रहमानी ज़रुरतमंद मरीज़ो के ऑपरेशन के साथ कम से कम खर्च मे जांचे और दवाईयों का भी इंतिज़ाम कर रहे हैं और कई डॉक्टर्स और हॉस्पिटल के साथ मिलकर मरीज़ कम से कम खर्च मे फैंज़याब कर रहे हैं।

कहते हैं की बूंद बूंद से ही सागर भर जाता हैं मरीज़ पैंसो के अभाव मे बगैंर ऑपरेशन के ना उम्मीद होकर अपने घर बैंठे थे और ऑपरेशन नहीं करवा पा रहे थे, हम शुक्रगुज़ार हैं तमाम अहले खैंर लोगो का जिनके माली ताअउन से मरीज़ घर से निकलकर हॉस्पिटल भी पहुँचे हैं और ऑपरेशन भी हो पाया हैं। मिशन शिफा-ए-रहमानी को इस तरह की कोशिशों के लिए लगातार आप जैंसे अहले खैंर लोगो की ज़रुरत हैं। हम सभी को मिलकर इस मिशन को कामयाब बनाना हैं।

उम्मीद ही नहीं बल्कि मुझे यकीन हैं की आप सभी मिशन शिफा-ए-रहमानी के साथ इसी तरह जुड़कर कई और ज़िंदगी को बचाने की कोशीशे करेंगे, बल्कि इस साल इंशा अल्लाह एक हॉस्पिटल की बुनियाद भी डालेंगे।

शकील शेख
द सेवियर यूथ वेलफेयर एसोससिएशन
मिशन शिफा-ए-रहमानी

पड़ोसी का हक.... अल्लाह की बुरगुज़िदा नेक खातुन का पड़ोसी के लिए अमल

दिल का दौरा। जी हाँ बशीरन बी को दिल का दौरा पड़ा था... छाती मे पिछली रात से ही दर्द हो रहा था... उलटे हाथ मे रह रहकर झुनझुनी चल रही थी... फिरदोस के अब्बु जहांगीर को काम कभी मिल रहा था... कभी नहीं... घर के हालात से बहुत आशना थी की अल्लाह ना करे भर्ती करने की नोबत पड़ गई तो क्या होगा ? कहाँ से इलाज का खर्चे के रुपए आएँगे। ... लेकिन सीन का दर्द था कि कुव्वते बर्दाश्त का इम्तेहान लेने पर उतारु था... जब बर्दाश्त करने की हद अपनी आखिर पर आ गई तो धीरे से कह पड़ी... सुनिए। मुझे सीने में बेहद शदीद दर्द हो रहा है लगता है अटेक आ गया है। पता नहीं क्यों जी को भी अच्छा नहीं लग रहा है... किसी हॉस्पिटल चले क्या ?

फिरदोस के अब्बु ने कहाँ ठीक है इस वक्त सरकारी हॉस्पिटल में ही चलते है तुमको पता है घर में खाने के ही वांदे है। इलाज के रुपए कहाँ से आएँगे... चलो देखते है... वह दोनों ही एम.वाय. गए वहाँ जेसा कि शक था उनको मेजर अटेक आया था उन्होंने ईसीजी के आधार पर आई.सी.यु. में भर्ती कर लिया और इलाज शुरु हुआ जो कि सिर्फ कुछ गोलियाँ और इंजेक्शन थ जिससे नींद आ गई... ड्युटी पर मोजुद डॉक्टर ने बता दिया कि यहाँ पर बस यही इलाज है एक बार हालात सुधर जाए तो डिस्चार्ज के बाद एन्जियोग्राफी और उसकी रिपोर्ट के मुताबिक स्टेंट या दिल का बायपास ऑपरेशन करवाना पड़ेगा... डॉ. साहब हम तो इन्दौर के हे नहीं होशंगाबाद से यहाँ इन्दौर रोज़गार के लिए आए हुए है ? हमारे पास कोई दुसरा साधन नहीं है... ना ही इतना महँगा इलाज कराने के लिए रुपये है हमारे पास...

डॉक्टर : देखो भाई आप किसी से बात करो लेकिन यह तो कराना पड़ेगा ही...

जहांगीर को हॉस्पिटल के बाहर बस रह रह कर रोना आ रहा था और साथ मे जान पहचान वाले दोस्तों से वह मोबाईल पर बात करता जाता था और उनको अपनी बीबी के हालात बताता चलता था... शायद किसी को रहम आ जाए... और फिर उसको नयापुरा के अशरफ अंसारी भाई का ख्याल आया और वह उनको भी पुरी बात बता दिया साथ ही मदद की गुज़ारिश भी करी तब अशरफ अंसारी भाई ने कहा कि वह अपने जान पहचान मे होशंगाबाद के एक परिवार से बात करेगा और बताएगा कि क्या मदद की जा सकती है...

अशरफ अंसारी भाई ने एजाज़ भाई से बात की और उनकी अम्मी ने पुरी बात सुनने के बाद कहा कि अल्लाह सब आसान करेगा, कितने का खर्चा है बातए ? जो भी हमसे मदद होगी हम करेंगे पड़ोसी की मदद करना हुज़ुर सल्ललललाहो अलैयही व सल्लम की सुन्नत है... खर्चे का बजट 1 लाख 40 हज़ार रुपये था। और उनके पास उसमे 47 हज़ार रुपये कम पढ़ रहे थे... अशरफ अंसारी भाई ने शकील शैख भाई से बात की और मिशन शिफा-ए-रहमानी ने इसमे अपना हिस्सा मिलाकर यह ऑपरेशन कामयाब कराया...

काश आज उम्मत की हर माँ एजाज़ भाई की अम्मी की तरह हो जाए जो अपने शहर के लोगों के लिए अपने पड़ोसियों रिश्तेदारों के लिए इस तरह का जज़्बा दिल मे रखकर मदद करती हो। और सुन्नते रसुल सल्ललललाहो अलैयही व सल्लम के हुक्म के मुताबिक अपनी ज़िन्दगी को चलाती हो...

अल्लाह रब्बुल इज्ज़त कुरान में सुरह निसा में फरमाता है.....

وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسَاكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا [النســـاء: ٣٦]

और तुम अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक मत करो... और माँ-बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजो से और नज़दीक के पड़ोसी से और अजनबी पड़ोसी और मजलिस के साथ बेठने वाले और मुसाफिरों से और जिन के तुम मालिक हो चुके हो (इन सब के साथ नेकी किया करो) बेशन अल्लाह उस शख्श को पसन्द नहीं करता है जो अहंकार (घमंड) करने वाला मगरुर और फख्र करने वाला हो... अल कुरान सुरह अन-निसा-4 आयत नं.36

अल्लाह के रसुल हुज़ुर सल लल लाहो अलैयही व सल्लम ने पड़ोसियों के हक और उनके लिए ज़िम्मेदारियों के बारे में अलग अलग हदीसों में बयान किया है... जिसमें पड़ोसियों के हुकुको को बहुत ही साफ साफ बयान कर दिया गया है...

عبد الله بن عمرو قال: قال رسول الله: «خير الأصحاب عند الله خيرهم لصـــــاحبه، وخير الجيران عند الله خيرهم لجاره» (أخرجه الترمذي و صححه الألباني)

أخرجه الترمذي (١٩٤٤)، وأحمد (٦٥٦٦)

अब्दुल्लाह बिन आमरु रदि अल्लाहो अन्ह से मरवी है हुज़ुर सल लल लाहो अलैयही व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह के नज़दीक तुममें सबसे बेहतर वह है जो अपने दोस्तों के साथ बेहतर है और तुममे सबसे ज्यादा अल्लाह के पड़ोस में हे वह जो अपने पड़ोसियों के साथ बेहतर पड़ोसी है
(सही तरमिज़ी 1944 मुसनद एहमद वाल्युम 2 पेज 168)

MEDIA COVERAGE
मिडीया कवरेज

जहाँ पर जाकर इन्सानियत सुर्ख़रु होती है... उदास लबो पर मुस्कुराहटे जी जाती है...

यह हरीश जी है... यह सच्ची कहानी है... हरीश जी की... तबस्सुम बी की...

जिन्होंने तबस्सुम बी के घर को मुस्कुराहटों से भर दिया... यह हरीश जी है... मिशन शिफा–ए–रहमानी के ऑफीस पर एक मरीज़ के चेस्ट सी.टी. स्केन कन्सेशनल रेट पर करवाने आए थे... जिस समय यह आए तो उस समय "तबस्सुम बी" मुझसे अपनी बिमारी के बारे मे बता रही थी...

वह कोरोना काल था जब पहली बार टेलिफोन पर इस मरीज़ के रिश्तेदारों ने बात की थी और "डॉ. मुफज्जल रस्सीवाला साहब" से टेलिफोनिक कंसल्टेशन किया गया और इनका MRI करवाया गया जिसमे इनको बच्चेदानी का कैंसर निकला था जो कि ओवरी मे फैल चुका था... देरी के कारण पेट मे बहुत सारा पानी (एसाइटिस) भर गया था... इस एसाइटिस के कारण मरीज़ को तत्काल ऑपरेशन मे नही लिया जा सकता था... शेल्बी हॉस्पिटल के "कैंसर फिज़िशियन डॉक्टर आकाश तिवारी साहब" के निर्देशन मे कीमो थेरेपी शुरु करवाई गई... जिससे कि उस मरीज़ा की तकलीफ को कम किया जा सके... ट्युमर का साईज़ बड़ा था और कोरोना महामारी के उस कठिन वक्त मे कोई दुसरी कोई राह भी नही थी...

मरीज़ा को कीमो थेरेपी से फायदा मिला और उसके पेट का पानी (एसाइटिस) सुख गया और कैंसर का ट्युमर भी थोड़ा साईज़ में कम हुआ... यह मरीज़ा के लिए अच्छे लक्षण थे... एक उम्मीद की खिड़की खुली थी... कि उसका ऑपरेशन कराया जाकर कैंसर और उसका ट्युमर निकाला जा सकता था...

"कैंसर फिज़िशियन डॉक्टर आकाश तिवारी साहब" ने मरीज़ा को सलाह दी कि यह आपका समय है... अब यदि आपक ऑपरेशन हो जाए तो शायद आपके जीवन मे कुछ आशा की किरणे जाग जाए... आप सर्जन्स से मिलिए और अपना ऑपरेशन प्लान करिए... तबस्सुम बी और उनके परिवार शहर के कई कैंसर सर्जन्स के पास इस ऑपरेशन के लिए गए। लेकिन उन्होंने जो खर्चा बताया वह उनके बस के बाहर ही था... उनको यह ही समझ नहीं आ रहा था कि इतना रुपया वह कहाँ से तुरंत मे लाए जिससे कि तबस्सुम बी के चेहरे पर फिर से तबस्सुम (मुस्कान) खिल उठे...

परिवार की परेशानी यह थी कि उनके पास आर्थिक तंगी और कर्ज़दारी पीछा नहीं छोड़ रही थी... दिसम्बर से ही देश मे एन.आर.सी., सी.ए.ए. का आंदोलन और उसके बाद लॉक–डाउन ने परिवार को कही का नहीं छोड़ा था... कीमोथेरेपी का रुपया अलग ऑपरेशन के बाद दरकार था... कुल मिलाकर खर्चा की कम होने का नाम नहीं लगता दिख रहा था...

तो में कहाँ था। अरे हाँ तबस्सुम बी मुझको अपने ऑपरेशन कराने की गुज़ारिश कर रही थी। और खर्चे मे मदद की गुज़ारिश भी... और हरिश जी मुझसे अपने एक मरीज़ के छाती के सीटी स्केन के रुपए कम कराने आए हुए थे... और मेरा और तबस्सुम बी की चर्चा को बड़े ध्यान से सुन रहे थे... में तबस्सुम बी और उनके रिश्तेदारो को समझा रहा था कि देखिए हमारे पास मिशन शिफा–ए–रहमानी मे कोई रिज़र्व फंड नहीं होता है... जब कोई ज़रुरतमंद मरीज़ हमारे पास मदद के लिए आता है... हम अपील डाल देते है... और जब रुपये आ जाते है तो ऑपरेशन करा देते है... फिलहाल हालात यह है कि सलमा बी नाम की मरीज़ा की अपील डाली हुई है... और उसके लिए मात्र 30–35 हज़ार रुपये ही आए है जबकि उसको भी कम ओ बेश उतने ही रुपये की और ज़रुरत है... अभी हालात खराब है सभी दान–दाता थक रहे ळै मंदी की मार चारों तरफ पैर फैला रही है आप कुद दुसरी व्यवस्था देखिए... हमने जितनी मदद करना थी कर दी हमारी सीमाएँ हे...

तबस्सुम बी : देखिए भाईजान मेरी मदद करिए डॉक्टर ने कहाँ है मेरी जान बच सकती है। अल्लाह जब बीमारी किसी को दे। तो आफत और गरीबी न दे। बस यही कह सकती हुँ में... में और शकील भाई असमंजस मे थे कैसे समझाए कि हमारे पास भी रुपये नही है।

उसी समय जनाब मकसुद भाई का फोन आया और उन्होने इसी मरीज़ का ऑपरेशन करवाने की गुज़ारिश की और बताया कि वह इसमे 25000 की माली ताअउन कर रहे है बाक़ी आप देखे। कुछ उम्मीद दस रुपये ने हमे बांधी और 5000 रुपये का मुझे पता था कहाँ से लेना है। मैने डॉक्टर मुफज़्ज़ल रस्सीवाला साहब से बात की सर आपको ख्याल है हमने लॉकडाउन मे केस को टेली कंसल्टेशन किया था... उसका अब यह स्थिति है... रुपये नहीं है और उधार में ऑपरेशन करना है ? ऑर समय नहीं है।

डॉक्टर मुफज्जल रस्सीवाला साहब ने जवाब दिया "लब्बैक भाईजान (राज़ी भाईजान) आप तैयारी करिए... ऑपरेशन के पहले की सारी जाँचे करवाए और फिटनेस लेकर जब चाहे जब एडमिट करिए देखेंगे" शेल्बी मे हर तरह के सर्जन्स इन हाउस मिल जाएँगे मेजर सर्जरी है वही करेंगे... डन...

इधर इस टेलिफोनिक चर्चा से दुर हरीश जी जो आए तो 1000 रुपये का डिस्काउंट लेने थे... मन ही मन में कुछ सोच रहे थे... उनके मन में चलती उहा–पोह को वह रोक नहीं पाए... और मुझे इशारे से अलग ले जाकर बोले... इस महिला तबस्सुम बी के ऑपरेशन में कितने रुपयों की ज़रुरत है ? उसकी आप परवाह ना करे। में इसका चेक आपको भेज दूँगा।

क्या कहुँ। किसी शुक्र गुज़ारी करु। कितनी शुक्र गुज़ारी करुँ। यह हमारा प्यारा भारत है... जहाँ के बाशिन्दे मदद करते वक्त यह नहीं देखते है कि किसकी मदद कर रहे है... बस मदद कते है... जहाँ हरीशजी–अन्जान तबस्सुम बी के जीवन में मुस्कुराहटें फैलाने के लिए अपने माल को खर्च कर देते है... यह वह लोग है जो इन्सानी कद्रो कीमत को दोबाला कर देते है... इनके जज़्बे से मानवीय मुल्य अपनी सर्वोच्च पराकाष्ठा पर होते है... यह धर्मों की छद्म दीवारों को तोड़कर उससे परे अन्जानो के दिलों मे भी उम्मीद के लिए रोशन कर जाते है... जब तक हरीश जी जैसे मुखलिस गंगा जमनी सांस्कृतिक के मुहाफिज़ लोग हमारे देश मे है... हमारे देश के भाई चारे... परस्पर विश्वास... एक दुसरे के लिए कुर्बानी देने का जज़्बा कायम है...

हमे मिशन शिफा–ए–रहमानी मे लगता है कि हमारा देश मेहफुज़ है... हम शुक्र गुज़ार है डॉक्टर आकाश तिवारी साहब... डॉक्टर मुफज़्ज़ल रस्सीवाला साहब... नयन गुप्ता साहब... राबर्ट नर्सिंग होम... मेडिकेयर... और शेल्बी हॉस्पिटल के स्टाफ के समस्त स्टाफ के जिन्होंने समय समय पर हर संभव सहयोग किया।

ब्रेन ट्युमर का कामयाब ऑपरेशन

अम्मी कोरोना काल की केद से आज़ादी चाहती थी । कोरोना के वैश्विक संक्रमण और उनकी बढ़ती उम्र के चलते उनको घर में कैद कर रखा गया था कि कही किसी तरह की अनहोनी न हो जाए... अल्लाह का शुक्र रहा किसी तरह की परेशानी के बगैर सब ठीक ठाक रहा... तो उन्होंने ज़िद पकड़ी की मरीज़ को देखने जाना है हॉस्पिटल कितने दिनों से घर घर ही में हुँ ? चलो किसी मरीज़ को देखने चले... तो आज यहाँ हे... इस मरीज़ा को बार–बार चक्कर आ रहे थे और एक दिन मे दो बार अपने आप बेलेन्स बिगड़ जाता और जहाँ रहती वही गिरकर बेहोश हो जाती... फिर जब ट्रस्ट के न्युरो सर्जन डाक्टर जफर शेख साहब ने इनकी जाँच की तो पता चला कि दिमाग में बहुत बड़ा टयुमर था जिसे निकालने के लिए ऑपरेशन करना बेहद ज़रुरी था... ऑपरेशन मे टयुमर के साथ साथ ब्रेन का लोब (हिस्सा) भी निकालना ज़रुरी था... वरना उसके वापस से ट्युमर मे बदल जाने चांस रहते है... सबसे बड़ा खतरा यह था कि दिमाग का खराब हिस्सा निकालते समय मरीज़ के गहरी बेहोशी (डीप कामा) मे जाने के चांस बहुत थे... मरीज के रितेदार कई सर्जन्स के पास चक्कर लगाकर ना उम्मीदी में वापस आ गए थे और कही भी उनको संतुष्टी इत्मिनान नहीं हो रहा था...

मिशन शिफा–ए–रहमानी की टीम ने मरीज़ के रिश्तेदारों को अच्छे से समझाया और इस ऑपरेशन को करने के लिए राज़ी किया ... ऑपरेशन बजट को मेनेज किया गया मरीज़ का ऑपरेशन साथ खेरियत के साथ हो गया... और मरीज़ा बात करते करते ऑपरेशन थिएटर से बाहर आइ... और 4 दिन बाद हॉस्पिटल से घर साथ खेरियत से पहूँच गई है, निकाले गए ट्युमर की गठान को भारत के चार बड़े शहरों के हिस्टोपेथालाजी विभाग मे भेजा गया और सभी जगह ट्युमर की रिपोर्टस मे केंसर का टयुमर नहीं निकला ... वह सामान्य ट्युमर था... मरीज़ा आज भी गहन निगरानी में है... इस ऑपरेशन की कामयाबी मे शेल्बी हॉस्पिटल के एडमिनिस्ट्रेशन और सभी डाक्टरस नर्सिंग स्टाफ की कोशिशों को सलाम... डाक्टर ज़फ़र शैख सर, डॉक्टर मुफ़ज़्ज़ल रस्सीवाला सर व मि. नवज़ार रहमान दानिश रहमानी गौरी, जनाब शकील शैख साहब की मेहनतों को दिल से सलाम... सभी मिशन शिफा–ए–रहमानी के साथ जुड़े हुए साहिबा खैर हज़रात को दिल से सलाम जिनके दिए हुए होसलों से हम इतने जटिल क्रिटिकल केसेस कर पा रहे है...

आपके आस पास यदि कोई मरीज़ ब्रेन ट्युमरसे पीड़ित है और रुपयों की कमी से ऑपरेशन नहीं करवा पा रहे है ? आप हमसे बात करिए...

भारत के गंगा–जमनी सांस्कृति के पेरोकार

यह मोहम्मद शरीफ है.... यह हम मिशन शिफा ए रहमानी है... ओर यह विजय पण्डया जी है... और हम यहाँ नफरत के सौदागरो के प्लान को नाकामयाब करने आए है...

BBM ग्रुप से सलमान खान ने बताया कि एक मरीज़ को सीने मे शदीद दर्द है ओर रतलाम से ला रहे है... उनका अर्जेंट मेनेजमेंट करना है... मेने गोकुलदास हॉस्पिटल पहुँचने के लिए कहा, और वहाँ मरीज़ को रिश्ते मे भाई लगने वाले एक बेहद नर्म मिजाज़ शख्स ने सारा मेनेजमेंट संभाल रखा था.... बहुत शिद्दत से पुरी रात वह भाग–दोड़ और एन्जियोग्राफी करवाई गई जो कि बिल्कुल नार्मल थी मरीज़ को 3 दिन तक हॉस्पिटल मे रखा गया और साथ खेरियत के छुट्टी दे दी गई... छुट्टी वाले दिन बड़ा खुश गवार माहोल था... और हम भी खुश थे... तब बातो बातो मे पहली बार पता लगा कि यह शख्स जो 3 दिन से खामोशी और गम्भीरता से मरीज़ की खिदमत मे लगा हुआ है.... इनका नाम श्री विजय पण्डया जी है ओर यह मोहम्मद शरीफ भाई के दोस्त है.... हमारे देश के हर मोहल्ले मे करोड़ो श्री विजय पण्डया जी है.... मोहम्मद शरीफ है... जो नफरत भरे माहोल में मोहब्बत और इन्सानियत के पैगाम को अमर करते है... हमारे देश मे परस्पर विश्वास.... स्नेह और आपसी सोहर्द की जड़ो को अपने नि:स्वार्थ व्यवहार से मज़बुत करते है... यह दोनो तमाचा मारते है उन नफरत के सोदागरो के मुँह पर... जो मंदिर मे पानी पीने के लिए आए हुए निरिह मासुम बच्चे को मारकर विडियो वायरल करके चंदा उगाने का धंधा करते है... और एक समुदाय विशेष मे असुरक्षा की भावना पैदा करते है... देश की गंगा–जमनी तहज़ीब और तमद्दुन (सांस्कृति और सभ्यता) को खत्म करने का कुत्सित प्रयास करते है...

हमारे देश के हीरो श्री विजय पण्डया जी जेसे लोग है जो नि:स्वार्थ भाव से खामोशियों से अपने नेक कामो को करते चले जा रहे है...

अमुमन हम मिशन शिफा–ए–रहमानी में अपने मरीज़ों के चेहरों को छुपा देते है लेकिन इस तस्वीर के साथ इस पोस्ट को करने की इजाज़त दी है जिससे मन्ज़र ए आम पर इन्सानियत का... अमन का... भाई चारे का पैगाम जाए... हम आप सभी के शुक्र गुज़ार है...

स्पाईन व ऑर्थो सर्जरी

युरोलॉजी

इन्दौर मिर्गी विशेषज्ञ समिती द्वारा डॉ. वी.वी. नाडकर्णी मेडम द्वारा गीता भवन ट्रस्ट के सहयोग से मिर्गी रोगियो को फ्री दवाई व भोजन वितरण

मिशन लुक़मा

जनरल सर्जरी

दिल की/बायपास/एन्जियोप्लास्टी/हार्ट वाल सर्जरी

न्युरोसर्जरी

बच्चेदानी व ब्रेस्ट केंसर सर्जरी

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस की मुबारकबाद

अच्छे उस्ताद खुशकिस्मत होने पर मिलते है... और इस मामले मे अपने को बड़ा खुशकिस्मत मानता हूँ... छोटी क्लास से ही मेडम आबेदा लिल की शफाकत मेरे साथ रही... मुझसे खिदमतें खल्क का जज्बा भरने में भी आपकी तरबियत का हाथ है... आप ने जब सुना कि ट्रस्ट ईशाते उलुमे इस्लामी व ईकबाले रहमानी ट्रस्ट रजिस्टर्ड हो गया है... मुझे अपने घर बुलाकर बैंक अकाउंट खोलने के लिए चेक दिया... और मुसलसल आपका ताअउन हमारे साथ हर मरीज़ मे बना रहता है...

एमरजेन्सी मे इस तरह के बच्चे मरीज़ जब आ जाते है तो अपील भी डालने का वक्त नहीं रहता है कि फंड इकठ्ठा कर लिया जाए... पेट पर लगी गहरी चोट और आंतरिक ब्लिडिंग तिल्ली फटने के कारण होती है... ऐसे वक्त यह निर्णय लेना कि सर्जरी करे या पेट मे हो रही ब्लिडिंग के रुकने का इंतेज़ार किया जाए... इसको जज करना एक सर्जिकल एक्सपर्टिज है... बहरहाल बच्चा बहुत छोटा था और गाँव का था और बेहद गरीब... सब कुछ साथ खेरियत के निबट गया और बच्चा डिस्चार्ज होकर आज घर चला गया....

आज 2 मरीज़ो को मेडम ने विजिट किया और पुरे मिशन के ज़रिए अब तक किए जा रहे सारे केसेस के बारे में विस्तार से जानकारियाँ ली...

शुक्रिया आबेदा लिल मेडम मिशन शिफा–ए–रहमानी दिल की गहराईयों से आपका शुक्रगुज़ार है... हर लम्हे हमारे साथ खड़े रहने के लिए...

मध्य प्रदेश का पहला ब्रेन ट्युमर नाक के ज़रिए दुरबीन से ऑपरेशन करके निकाला गया

मध्य प्रदेश में पहली बार मिशन शिफा–ए–रहमानी के तहत शैल्बी हॉस्पिटल मे न्युरो सर्जन डॉक्टर जफर शेख व टीम के द्वारा दिमाग के ट्युमर को नाक के रास्ते से दुरबीन माइक्रो एन्डोस्कोम के द्वारा निकाला गया...

बेबी ज़ेहरा पुलिस ऑफिसर बनकर देश की खिदमत करना चाहती थी... लेकिन अचानक एक दिन उसको बुखार सर्दी जुकाम हुआ और फिर बार बार यह सब होने लगा... नाक से ज़ुकाम बार बार बहने लगा और उसकी जाँचे कराने हॉस्पिटल लेकर गए जहाँ नाक कान गले के डॉक्टर ने नाक मे गुठली बताई... और ऑपरेशन करके उसे निकालने का खर्च 40,000 चालीस हज़ार रुपए बताया... बच्ची के वालिद को मास्टर अरहाम जिसके दिमाग का ऑपरेशन मिशन शिफा–ए–रहमानी के तहत आप सभी की मदद से हुआ था... लेकर आए थे... पुछने पर पता चला कि... इस नाक की गठान को CT Scan की रिपोर्टस के आधार पर नाक कान गले के सर्जन ने नाक की पोलिप (छोटी गुठली) समझकर उसको बहुत हल्के मे लेकर उस गठान को पंचर करके निकलने के लिए रिश्तेदारो को 40,000/– (चालीस हज़ार रुपए) का बजट दे दिया था... जिसके लिए परिवार जद्दो जहद कर रहा था...

इस केस को डॉक्टर जफर शेख सर को दिखाया गया... और उन्होने इस को MRI Brain का सुझाव दिया जिसमे इस गठान के दिमाग तक मे होने का पता चला था... यदि बिना MRI कराए इस बच्ची की इस गठान को निकालने की कोशिश की जाती तो पता नही कितना भयावाह नतीजा होता... क्योकि दिमाग का पानी पुरा बाहर निकल जाता और बच्ची सीधे कॉमा मे पहुँच जाती... ज़ेहरा की उम्र सिर्फ 7 साल थी... और इतनी कम उम्र मे ही उसे "नेज़ल मेनिन्जिओसील" दिमाग से टयुमर बड़ा होकर नाक के रास्ते निलक कर बाहर आ रहा था... साथ ही साथ कमर की हड्डी का पानी भी नाक के रास्ते से बाहर बुंद बुंद टपक रहा था... इस ऑपरेशन को प्लान किया गया जिसकी खासियत यह रही थी कि यह ऑपरेशन बिना सर पर चीरा लगाए हुए स्पेशल एन्डोस्कोप की मदद से जिस नाक में टयुमर था उसी हाथ की नाक के छेद के ज़रिए किया गया था... इस बच्ची का केस यह था कि इसके दिमाग से टयुमर निकलकर उल्टे हाथ की नाक के छेद से बाहर आ रहा था... और रीढ़ की हड्डी का पानी नाक से बुंद बुंद टपक रहा था...

इस टयुमर को नाक के उसी छेद से छोटे माइक्रो एन्डोस्कोप के ज़रिए बाहर निकलने का प्लान किया गया... न्युरो सर्जन डॉक्टर ज़फर शैख सर व टीम ने इस ऑपरेशन को बड़ी नफासत से अन्जाम दिया... मध्यप्रदेश मे दिमाग के इतने बड़े टयुमर को नाक के ज़रिए निकालने का यह पहला ऑपरेशन है... ऑपरेशन के बाद दिमाग और नाक के जोड़नेवाली छत को बच्ची के पेर की मांसपेशियों और चर्बी से बहुत महँगे टीशु गलु से रिपेयर किया गया क्योंकि वहाँ टाँकें लगाने की जगह नहीं रहती है इस तरह की सर्जरी मे... रीढ़ की हड्डी का पानी वही से लिंकेज हो रहा था... दुसरे दिन थोड़ा सा नाक से पानी रिसना शुरु हुआ... जिसकी वजह से बच्ची को 4 दिन की बजाए 10 दिन तक ICU मे गहन ऑब्जर्वेशन के साथ डॉक्टर सौरभ अग्रवाल सर... डॉक्टर मुफफज्जल रस्सीवाला सर... डॉक्टर इरशाद... और डॉक्टर मुकेश... की निगरानी में रखा गया... जब नाक से रीढ़ की हड्डी का पानी रिसना बन्द हो गया... सब तरह से सभी विशेषज्ञ डॉक्टर इस बात से मुत्मईन हो गए की बच्ची अब सुरक्षित है उसे डिस्चार्ज कर दिया गया...

खास बात यह है कि बेबी ज़ेहरा ICU मे डॉक्टर्स और नर्सेज के खिदमत के काम देखकर पुलिस की जगह डॉक्टर बनकर पुरी मानवता की खिदमत करना चाहती है...

इस ऑपरेशन का खर्च बेहद बढ़ गया था और शेल्बी हॉस्पिटल में डॉक्टर मुफ़ज़्ज़ल रस्सीवाला साहब, सी.ई.ओ. धनंजय सर, डॉ. विवेक जोशी, मि. फेजुद्दीन ने इस खर्च को कन्ट्रोल करने मे बेहद अहम भूमिका अदा की...

बोहरा समाज की सुप्रसिद्ध समाज सेविका जमीला युसुफ जालीवाला मेडम की गरिमामयी मोजुदगी मे हॉस्पिटल के सम्पुर्ण बिल का चेक बच्ची के हाथो मे दिया गया... बोहरा समाज की सुप्रसिद्ध समाज सेविका जमीला युसुफ जालीवाला मेडम ने मिशन शिफा–ए–रहमानी के डोनर्स की तरफ से शेल्बी हॉस्पिटल के पुरे स्टाफ डॉक्टर्स और एडमिनिस्ट्रेशन का शुक्रिया अदा किया इस मौके पर समाज सेवा के लिए ऑपरेशन के द्वारा मिशन शिफा–ए–रहमानी की मानवीय खिदमात के लिए वरिष्ठ न्युरो सर्जन डॉक्टर जफर शेख व टीम मिशन शिफा–ए–रहमानी का भी एजाज किया गया... जनाब शकील शेख, दानिश रहमान गौरी ने सभी का इस्तकबाल किया व ट्रस्ट के ट्रेजरार नवज़ार रहमान ने सभी मेहमानों का शुक्रिया अदा किया...

कुछ दर्दो को सिर्फ दिल की आँखो से ही महसुस किया जा सकता है।

एक नाबीना वालिद अपने बेटे को लेकर बड़ी शिद्दत से पहली मंजिल चढ़कर मिशन शिफा–ए–रहमानी के ऑफीस मे घबराए हुए आए थे... बेटा शदीद दर्द से कराह रहा था... और वालिद की बेबस आवाज़ मे लर्ज़िश थी... डाक साहब (सब मुझे भी डॉक्टर ही समझते है) मेरे बेटे को हर्निया अटक कर फँस गया है ।और शदीद दर्द से कराहे जा रहा है और अर्जेंट ऑपरेशन करवाना है... रुपये है नही !! आयुष्मान मे दो हॉस्पिटल ने मना कर दिया है... कोई अस्पताल नहीं कर रहा है इसका ऑपरेशन... आप करा दो ना बहुत दर्द हो रहा है इसे... बाबा आपके पास कुछ रुपए है कि नहीं ? डाक साब 5–7 हज़ार हो जाएगे बस ! वह भी किसी से लेना पड़ेंगे उधार।

मेने फिर पुछा : और खर्चा कितने का है... ?

डाक साहब कोई हॉस्पिटल 25 हज़ार... कोई एमरजेन्सी का बोलकर 50 हज़ार बता रहा है... क्या करु बेटे का दर्द देखा नहीं जा रहा है... (एक बाप अपनी औलादो को दिल की आँखो से ही देख सकता है)... बच्चा था कि शदीद दर्द से तड़प रहा था ?

फैज़ मियाँ आपके पास कितने रुपए है ? मेने ऑफिस के खिदमतगुज़ार फेज़ मियाँ से पुछा

भाई अभी तक जो गल्ले खोल लिए है उनमें से 18300 रुपए निकले है...!

माशाअल्लाह इतने में तो ऑपरेशन ही हो जाएगा फैज़ मियाँ... चलिए मफाज़ भाई इसको लेकर फौरन डॉक्टर मुफ़ज़्ज़ल रस्सीवाला सर के पास जाओ और एडमिट करवाकर ही वापस आना.... नवज़ार सर की जानकारी मे केस डालकर एप्रुवल ले लिजिएगा यह एमरजेन्सी केस है...

डॉक्टर मुफ़ज़्ज़ल रस्सीवाला साहब ने बड़ी नफासत से ऑपरेशन कामयाब किया और आज बेबी और उसके वालिद बेहद दुआएँ देते हुए साथ खेरियत से घर चले गए...

दोस्तों मिशन शिफा–ए–रहमानी बड़ी अजीब अजीब तरह से फंड कलेक्शन करके इन ऑपरेशन को कामयाब कराता है... जैसे मालवा मिल एरिया में चाचा साहब अपने ठेले पर गल्ले मे डोनेशन खुद भी देते है और ग्राहको से भी डोनेशन की गुज़ारिश करते है। मफाज़ मियाँ और फैज़ खान बड़ी खामोशी से ट्रस्ट के गल्लो के फंड कलेक्शन का मेनेजमेंट का काम देखते है... यह हमारे मिशन की जान है... युवा है... साफ दिल है... और दिलो में दु:खी लोगों की खिदमत का जज्बा रखते है... इन सब बच्चों को अपनी खास दुआओं से नवाज़े इनके बेहतर मुस्तकबिल और खुशहाल ज़िन्दगी की तमन्ना है... अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से खास दुआएँ हमारे तमाम साहबे खैर (डोनर) हज़रात के लिए जिनके छोटे छोटे से ताअउन से इतने बड़े काम हो रहे है... अल्लाह इखलास अता करे उनके सदकात को कुबुल फरमा कर बरकते अता करें।

और ज़िन्दगी की जद्दोजहद के बीच ना उम्मीदी। सामाजिक सरोकारो और आबरु की हिफाज़त लिए घरो बेठे हुए लोग..... महँगा इलाज वह भी ऑपरेशन ना करा पाने का अनकहा दर्द... किसे सुनाए... किसे कहे ? यह कहानी है एक एसी बेवा खुद्दार खातुन की जो अपने पुरे परिवार का पेट मेहनत मज़दुरी करके पालती थी... छाती की बीमारी (ब्रेस्ट कैंसर) ने एसा तोड़ा कि काम करना दुश्वार हो गया और घर मे खाने कमाने की दुश्वारिया हो गई.... ऐसे मे किसी भाई ने इनको शिफा–ए–रहमानी का पता बताया कि आप कब तक परेशान होंगी जाकर इन लोगो से मिलिए यह आपकी बीमारी के मुताबिक आपकी मुश्किलो हल ज़रुर निकाल देंगे.... बरहाल जब यह आई तो बीमारी की सारी रिपोर्टस के मुताबिक इनको ब्रेस्ट कैंसर के ऑपरेशन की ज़रुरत थी और यह माली हालात नासाज़ होने के बायस अपना आपरेशन कराने से खुद को लाचार पा रही थी... सभी ट्रस्ट के साहबे खैर हज़रात की मामले के बारे में तफसील से केस के बारे मे बताया गया ओर सभी ने मदद के लिए रज़ामंदी देकर केस को जल्द से जल्द करवाकर इनकी मुश्किल हल करने के लिए कहाँ... अल्लाह का शुक्र रहा सभी तरह से जाँचो को दोबारा करवाया गया और इनकी बीमारी की तशखिस (डायग्नोसिस) को कन्फर्म पुष्ठ किया गया और डॉक्टर हुज़ेफा लोखण्डवाला साहब ने इनका मेजर ऑपरेशन साथ खेरियत से किया गया... जांचो के बाद किमो थैरेपी और रेडियो थेरेपी कराया गया मरीज़ा फिलहाल कैंसर से पुरी तरह से फ्री हो चुकी है और अपने परिवार का पालन कर रही है। बारोड हॉस्पिटल मे डॉ. संजय गोकुलदास और डॉ. मेहलाम कौसर साहब का इसमे विशेष सहयोग रहा....

बीमार की अदायत करना

बीमार की अदायत करना
ला–बासा तहूरुन इन्शा अल्लाह
अरबी मे,
لَآ بَأۡس طَهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ
तर्जुमा – कुछ हर्ज नहीं इन्शा अल्लाह ये बीमारी तुमको गुनाहों से पाक करेगी।
और 7 मर्तबा मरीज़ के शिफा याब होने की दूसरी दुआ पढ़े।
अस–अलुल–लाहल अज़ीम रब्बुल अरशिल अज़ीम अय्–यशफीयक
अरबी मे,
اَسْاَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمِ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكْ
तर्जुमा : मैं अल्लाह से सवाल करता हुँ जो सबसे बड़ और अज़मत वाला है और अज़ीम अर्श का रब है... के तुझे शिफा अता फरमाए...

सवाल : क्या जब हम किसी बीमार को देखने जाते है तो उसके लिए भी हुज़ुर ए मुकर्रम सलल्ललाहो अलैही व सल्लम ने कोई मसनुन तरीका बताया है ?
जवाब : जी बिल्कुल जब आप किसी बीमार की अयादात करने के लिए जाए तो सुन्नत पर अमल करने के एतबार से जाए... ना की दुनिया के दिखावे या अहसान जतलाने के लिए जाए...
जब हमारे हुज़ुर ए मुकर्रम सलल्ललाहो अलैही व सल्लम किसी बीमार की अयादत करने जाते तो उसके पास ज्यादा वक्त न ठहरते थे... जितनी देर मरीज के पास बैठते तब तक उसके लिए शिफा की दुआ करते रहते थे...

एक रिवायत मे लिखा है : हज़रत मुहम्मद सलल्ललाहो अलैही व सल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने मरीज़ की अयादात की गोया उसने अल्लाह की अयादत की...
अल्लाह तआला इतना मेहरबान है कि अगर बन्दा एक नेकी करता है... तो उसका बदला अल्लाह तआला हमे बहुत ज्यादा अता करते है... इसी तरह जब आप किसी बीमार को देखने जाते है तो अल्लाह तआला इस पर भी नेकी अता करता है... क्युंकि ये नेक काम कना हुकुकूल इबाद मे आता है...
लेकिन जब भी आप किसी की अयादत करने जाए तो सिर्फ आपकी नियत यही होनी चाहिए कि में अल्लाह की रज़ा के वास्ते जा रहा हुँ... कोई दुनियावी गरज से नहीं जा रहा हुँ... तो आपका जाना कुबूल भी होगा और साथ में आपको सवाब भी मिलेगा...
यहाँ हम आपको मरीज़ की अयादत के कुछ आदाब या अयादात का सही तरीका बता देते है...
जब भी आप किसी मरीज की अयादत के लिए जाए तो उससे खुदा पेशनी (खुश दिली) से पेश आए...
जब मरीज की अयादत करने जाए तो उसके लिए कोई फल या तोहफा वगैरह लेकर जाए... जो उसके लिए बेहतर हो...
मरीज़ के पास ज्यादा वक्त तक न बैठे ताकि उसे तकलीफ ना पहुँचे...
मरीज़ के पास बेठकर यह दुआ पढ़े जो उपर बताई है... अरबी मे
اَسْاَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمِ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكْ
तर्जुमा : में अल्लाह से सवाल करता हुँ जो सबसे बड़ और अज़मत वाला है और अज़ीम अर्श का रब है... के तुझे इस बीमारी से शिफा अता फरमाए...
मरीज़ के पास बेठकर उसे तसल्ली दिलाए या उससे ऐसी बाते करे जिससे उसका दिल खुश हो जाए...
आप मरीज़ को कुछ हदया (तोहफा) रुपये वगैरह का भी दे सकते है... ताकि मरीज की दवा व हॉस्पिटल का बिल का खर्च पूरा हो सके...
मरीज़ के सामने ऐसी बाते ना करे जिससे उसका दिल टूट जाए या ऐसी बाते ना करे जो मरीज़ को अच्छी न लगे...
खास तौर पर मरीज़ के सामने किसी दुसरे बीमार मरीज़ की उसी तरह की बीमारी और इलाज के बारे मे बात न करे या वही सलाह ना दे जो दुसरे मरीज़को दी जा रही है... यह काम इलाज करने वाले डॉक्टर और हॉस्पिटल स्टाफ का है जो उस मरीज़ा की बीमारी बारे मे और उसकी रिपोर्टस के बारे मे पुरी पुरी जानकारी रखते है...
कई बार हमारे युवा नवजवान हॉस्पिटल की महिला स्टाफ कामगार और नर्सिंग स्टाफ के साथ चुहलबाज़ा करने की नीयत से जाते है और कई बार उनको बेहद परेशान कर देते है...
इस तरह की हरकते महिला कर्मचारियो डॉक्टर नर्सिंग स्टाफ को दुसरे मरीज़ो की खिदम करने मे देरी का सबब बनती है... लिहाज़ा एसा करने से बचे वेसे भी यह गनाह का काम है...
मरीज़ से अपनी दुआ के लिए भी कहे अल्लाह बीमार शख्श की दुआ बहुत जल्द सुनता है... क्युंकि जो बीमार होता है अल्लाह तआला उसकी बीमारी के सबब उसके तमाम गुनाह माफ कर देते है और उसे ऐसा कर देता है जैसे उसने कोई गुनाह किया ही न हो...
नोट : मरीज़ कोई भी हो सिर्फ मरीज़ होता ना उसकी कोई जात होती है ना धर्म ना अकीदा... हमारे नबी ए करीम रहमातुल लिल आलामीन उस काफिरा दुश्मनाने जाना बीमार बुज़ुर्ग बुढ़ी औरत की भी अदायत करने तशरीफ ले गए जो आप पर हर रोज़ कुढ़ा कचरा फैंका करती थी... तो जब आप को उसके बीमार होने की खबर लगी तो आप उससे उसकी तबीयत का हाल जानने उसके घर तशरीफ ले गए जिसके सबब उसने तौबा करी और ईमान ले आई...
इसलिए बीमारो की अयादत (मीज़ाज पुर्सी) करनी चाहिए...
दोस्तों ये है बीमार की मिजाज़ पुर्सी या अयादत का सही तरीका... इसलिए बीमार की अयादत के आदाब अपनाइए, जिससे इन्शा अल्लाह आप बीमार की अयादत का हक भी अदा कर देंगे और साथ ही साथ अपनी आखेरत की कामयाबी का ज़रीया भी बना लेंगे...

IPS